Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.IV/ May; 12pp.1-4

ISSN:-2230-7850

Research Papers

पांगी घाटी में मुख्यतः मटर व अन्य सब्जियों के विकास के कार्य

सन्नी शर्मा
सहायक प्राध्यापक भुगोल
राजकीय महाविद्यालय पांगी
जिला चम्बा हि0प्र0 176323

सारांष :–

पांगी क्षेत्र हिमालय की गोद में प्राकृतिक सौंदर्य को समेटे चन्द्रभागा नदी के किनारे बसी एक सुन्दर घाटी है। इसके पूर्व में लाहौल–स्पिति व उतर पश्चिम में जम्मू कश्मीर राज्य स्थित है। घाटी में ऊंची पर्वत श्रृंखलाएं हमेशा हिमाच्छादित रहती है। सर्दियों में तापमान यहां पर शून्य से नीचे रहता है। कंप–कंपाती शीत ऋृतु अक्तूबर मास से अप्रेल मास तक रहती है। गर्मीयों में मौसम सुहावना हो जाता है तथा अप्रेल के बाद धीरे–2 जन–जीवन पटरी पर लौटता है तथा लोग पारम्परिक कृशि का कार्य प्रारम्भ करते है।

साठ और सहतर के दशक तक घाटी के बाशिंदों को भारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। विश्व के अन्य भागों से विल्कुल अलग–थलग, जीवनुपयोगी मूलभूत सुविधाओं से वंचित तथा जीवन चलाने के लिए राशन इत्यादि जरूरी वस्तुओं को दस व बारह दिनों तक पैदल चल कर तरेला से बरास्ता साचपास भेड़–बकरीयों पर लाद कर पांगी में पहुंचाना पड़ता था तथा सभी जावनुपयोगी वस्तुओं का शीत ऋृतु के लिए भण्डारण करना पड़ता था, क्योंकि इन दिनों समूची घाटी का आवागमन प्रदेश तथा देश के अन्य भागो से कट जाता था। सर्दियों में साच दर्रा बन्द होने के कारण लोग गुलाबगढ़–किश्तवाड़–जम्मू के अति दुर्गम पैदल मार्ग को तय कर चम्बा जिला मुख्यालय पहुंचते थे। सन 1986 में सड़क संगठन द्वारा किलाड़ से धरवास एवं साच की तरफ सड़क निमार्ण का कार्य आरम्भ करने से लोगों के मन में उन्नति की उम्मीद जगी। इससे पूर्व वर्श 1977 में हिमाचल सरकार द्वारा पहली बार हवाई जहाज के द्वारा घाटी में राशन गिराया गया।

घाटी अब तक प्रदेश तथा देश के अन्य भागों तीन वैकल्पिक मार्गों से जुड़ चुकी है। पूर्व की ओर से लहौल–स्पिति बरास्ता रोहतांग मनाली, पश्चिम की ओर से गुलाबगढ़–किश्तवाड़–जम्मू व दक्षिण की ओर किलाड़–बैरागढ़–चम्बा बरास्ता साचपास मार्ग। पांगी घाटी की जलवायु इतनी भिन्न है कि यहां पर सभी प्रकार की सब्जियों की खेती सफलता पूर्वक की जा सकती है। सब्जी उत्पादन एक लाभदायक व्यवसाय होने के साथ–2 मानव जीवन को पौश्टिक, स्वादिश्ट तथा संतुलित आहार प्रदान करता है। सब्जियों में विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्यवर्धक तत्व जैसे विटामिन, लवण, प्रोटीन तथा कार्बोहाइड्रेट प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं जो कि स्वसथ्य के लिए अति अवश्यक है।

घाटी में ऊंचे क्षेत्रों में उगाए जाने वाले मटर देश के अन्य राज्यों में अपने रंग, स्वाद, सुगन्ध व कुरकरेपन के लिए काफी लोकप्रिय है। इन मटरों की पैदावार ऐसे समय मन्डियों में आती है जिस समय मैदानी क्षेत्रों में इनका उत्पादन नही होता। घाटी के ऊंचे क्षेत्रों में रहने वाले किसान मटर के उत्पादन से अधिक आमदनी/आय प्राप्त कर रहे है। जिसके फलस्वरुप उनका जीवन स्तर उंचा उठ रहा है। मटर उत्पादन मे विविधता लाने के लिए अच्छी किस्में व नवीन कृशि तकनीकें भी महत्वपूर्ण है। इनका किसानों की आर्थिक दशा सुधारने में भविश्य मे सराहनीय योगदान रहेगा।

हरा मटर पांगी घाटी की एक प्रमुख बेमौसमी सब्जी है। व्यवसायिक रुप से इसे गर्मियों में पांगी के ऊंचे क्षेत्रों जिसमें सुराल, हुडान, कुमार तथा उडीन व सेचू पंचायत आती है, में उगाया जाता है। गर्मियों में इन पंचायतो का वातावरण मटर की फसल के लिए अनुकूल होने के कारण इन पंचायतों के किसानों के आय में पर्याप्त वृद्धि होती है क्योंकि मैदानी क्षेत्रों में अधिक गर्मी होने के कारण मटर का उत्पादन नही हो पाता, पांगी के इन क्षेत्रों का मटर अपनी विशेश मिठास व सुगन्ध तथा ताजगी के लिए सभी को अकर्शित करां है।

मटर की उन्नत किसमें:–

1 अगेती किस्में:–

अरकलः– बोनी झूरीदार बीज गहरे हरे रंग का सभी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म, 8–9 दानों वाली अन्दर को मुड़ी हुई फलियां, अधिक उपज के लिए बिजाई अप्रैल से मई के दूसरे पखवाड़े में पांगी के विभिन्न स्थानों पर करनी चहिए औसत पैदावार 50–60 क्विंटल प्रति हैक्टेयर।

2 मुख्य किसमें :–

लिकनः– मध्यम उंचाई झुरीदार बीज सभी क्षेत्रो के लिए उपयुक्त किस्म, हल्के गहरे रंग की 8–10 दाने वाली आगे से मुड़ी हुई फलियां। औसत पैदावार 100–125 क्विंटल प्रति हैक्टेयर।

Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.IV/ May; 12pp.1-4

आजाद पी–1:– लम्बे पौधे, गोल बीज, ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म, हलके हरे रंग की 8–9 दानों वाली फलियां। औसतन पैदावार 100–125 क्विंटल प्रति हैक्टेयर।

निवेश सामग्री

किस्म का नाम	प्रति हैक्टेयर	प्रति बीघा	प्रति कनाल
अगेती किस्मे (बीज)	120–130 कि0ग्रा0	10 कि0ग्रा0	5 कि0ग्रा0
मुख्य किस्में(बीज)	80–90 कि0ग्रा0	6–7 कि0ग्रा0	3 कि0ग्रा0
गौबर की खाद	200 क्विंटल	16 क्विंटल	8 क्विंटल
कैन	200 कि0ग्रा0	16 कि0ग्रा0	8 कि0ग्रा0
सुपर फॉस्फैट	375 कि0ग्रा0	30 कि0ग्रा0	15 कि0ग्रा0
क्यूरेट आफ पौटाश	100 कि0ग्रा0	8 कि0ग्रा0	4 कि0ग्रा0
स्टाम्प (लीटर) या	3 कि0ग्रा0	250 मि0ली0	125 मि0ली0
लासौ (लीटर) या	3 कि0ग्रा0	250 मि0ली0	125 मि0ली0
वैसलीन (लीटर)	2.5 कि0ग्रा0	200 मि0ली0	100 मि0ली0
सैंटरन (लीटर)	3 कि0ग्रा0	250 मि0ली0	125 मि0ली0

गौबर की खाद भूमि तैयार करते समय ही मिटटी में मिला दें कैन सुपर फासफेट क्यूरेट आफ पोटाश की पूरी मात्रा बिजाई के समय खेत में डाल दें।

बिजाईः– मटर के बीज सीधे खेत में समतल क्यारियों में इस अन्तर पर बीजे।

शीघ्र तैयार होने वाली किस्में 30 ग 5 सै0मी0

लम्बे समय पर तैयार होने वाली किस्में 45 ग 10 सै0मी0

बिजाई का समयः– अगेती किस्मे मार्च–जून

मुख्य किस्म मार्च–जून

जल प्रबन्धनः–

बिजाई से पहले एक मुख्य कार्य सिचाई करना अवश्यक है जिसमें भूमि में बीज अंकुरण के लिए पर्याप्त नमी हो जाए। अच्छी फसल लेने के लिए 10–12 दिन के अन्तर पर सिंचाई करनी चाहिए।

निराई–गुढाई व खरपतवार नियन्त्रण

फसल में 1–2 बार निराई–गुढाई की अवश्यकता होती है जो कि फसल की किस्म पर निर्भर करती है। पहली जब पौधों में 3–4 पत्ते हो या बिजाई के 3–4 सप्ताह बाद करे और दूसरी फूल आने से पहले करें। वार्शिक घास वाले और चौड़ी पत्तों वाले खरपतवारों की रोकथाम के लिए बिजाई के 2–3 दिन के अन्दर एलाक्लोर (लासौ) 15 कि0ग्रा0(स0प0) या थायोबैनकार्ब (सैन्टरन) 15क0ग्रा0(स0प0) या पैण्डीमिथालिन(स्टाम्प) 1 कि0ग्रा0 या फलूक्लोरालिन (बैसालिन) 1कि0ग्रा0 को 750–800 लीटर पानी को घोल कर प्रति हैक्टेयर छिड़काव करे।

तुड़ाई व उपज :– मण्डी में अच्छी कीमत के लिए फलियों का समय पर तोड़ना अनिवार्य है। अन्यथा इनके गुण पर प्रभाव पड़ेगा। बिकि अवस्था में फलियां पूर्णतयः मर जाती है। इसके बाद हरा रंग घटने लग जाता है। सामान्यता 7–10 दिन के अन्दर 4–5 बार फलियों की तुड़ाई की जाती है। अच्छी फसल से निम्नलिखित औसत उपज होती है।

किस्म का नाम	प्रति हैक्टेयर	प्रति बीघा	प्रति कनाल
अगेती फसल (क्विंटल)	60–85	5–7	2.5–3.5
मुख्यफसल (क्विंटल)	100–150	8–12	4–6
बीज उपज (कि0ग्रा0)	10–15	80–120	40–60

पौध संरक्षण :– लक्षण/आक्रमण :– बिमारियांः–

चूर्णसिता रोगः– पौधों के सभी भागों पर सफेद हलके रंग के धब्बे पड़ जाते है।

डपचारः– रोग के लक्षण देखते ही कैराथेन(5 मि0ली0) या वैटवेल(20 ग्रा0) या वैविस्टीन(5 ग्रा0) का 10 ली0 पानी में घोल कर छिड़काव करें।

विल्ट रोगः– जड़े सड़ जाती हैं तथा पौधे बिना पीले हुए मुरझा जाते है।

उपचारः–

1 बीज को वैविस्टीन(5 ग्रा0)/10 ली0 पानी में उपचार करने के बाद बोएं।

2 अधिक संक्रमित क्षेत्रों में अगेती बुआई न करें।

3 संक्रमित क्षेत्रों में तीन वर्शीय फसल चक्र अपनाएं।

फली छेदकः– सुड़ियां पत्तो पर पलती है और बाद में फलियों में घुस कर बीज खा जाती है।

डपचार :– कार्बोरिल (1.5 कि0ग्रा0) को 750 ली0 पानी में घोल कर प्रति हैक्टेयर छिड़काव करें।

Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.IV/ May; 12pp.1-4

सवधानीः– छिड़काव से 15 दिन बाद ही फलियां तोड़ें।

लीफ माईनर और थ्रिप्स :– लार्वे पत्तों पर सुरंग बनाते हैं प्रोण थ्रिप्स फूलों के अन्दर पलते है। तथा शिशु पत्तों और फलियों पर पलतें हैं।

उपचारः– साईपरमैथिन 0.0075 प्रतिशत या डाईक्लोवस 0.04 प्रतिशत को 100 ली0 पानी में घोल कर फसल पर जिस समय भी कीड़ो का प्रकोप दिखाई दे छिड़काव करें।

नोटः– दवाई का छिड़काव उस समय करें जब 40 प्रतिशत या इससे अधिक प्रकोप हो।

यह सभी मटर उत्पादन की विभिन्न तकनीकों तथा विधियों का वर्णन है जिसे अपनाकर किसान इस फसल का अधिक उत्पादन कर सकतें हैं।

पांगी घाटी में मटर की फसल का भविश्य बहुत ही सुनहरा है। यहां पर सरकार द्वारा मटर के बीज पर प्रति क्विंटल 2000 रुपये की सवसीडी दी जाती है। पांगी घाटी में मुख्यतः दो किस्म के मटर के बीज मिलते है जो कि अरकल तथा आजाद पी–1 है। इन बीजों के घाटी में वितरण का वर्णन इस प्रकार से है।

SN	Year	Seed PearVariety Arkel	Seed PearVariety Azad AP-1
1	2008–09	37.20 क्विंटल	42.80 क्विंटल
2	2009–10	100 क्विंटल	50 क्विंटल
3	2010–11	154.2 क्विंटल	199.6 क्विंटल
4	2011–12	154.2 क्विंटल	270 क्विंटल

इस तरह हमें पता चलता है कि कितना बीज मटर घाटी में वितरित किया गया। इसमें से अधिकतर बीज पंचायत सुराल, हुडान, परमार, कुमार, पुर्थी व शौर के किसानों द्वारा लिया गया।

पांगी घाटी का मटर मुख्यतः चम्बा, कुल्लू, किश्तवाड़ व जम्मू के बाज़ार में बिकता है। यह 20 रु0 प्रति कि0ग्रा0 से लेकर 35 रु0 प्रति कि0ग्रा0 तक बिकता है। मटर की फसल को लेकर किसानों की मुख्य समस्या नजदीकी मार्किट का न होना व यातायात के साधनों का अभाव, खराब सड़कें व पांगी की भौगोलिक स्थिति है। इसके अलावा किसानों की मुख्यतः समस्या यह भी है कि परिवहन लागत बहुत अधिक है लेकिन फिर भी मटर की फसल ने पांगी के लोगों के आर्थिक तथा समाजिक जीवन को बहुत प्रभावित किया है। इसके अलावा पांगी घाटी में अन्य सब्जियों का भी उत्पादन किया जा रहा है जैसे कि पत्ता गोभी, फूलगोभी, शिमला मिर्च, टमाटर, आलू आदि तथा घाटी में च्वसल भ्वनेम को भी बढ़ावा दिया जा रहा है जिसमें 80 प्रतिशत सवसीडी सरकार देती है तथा 20 प्रतिशत लागत किसान की आती है। घाटी में इसका वर्णन इस तरह से है तथा मैं Agriculture Development Pangi Killar की जानकारी व सहयोग के लिए बहुत धन्यवादी हूँ।

Pandit DeenDyal Kisan Bagwan Samridhi Yojna Part-1 Poly House

Year	Model	Full Part of Poly House	Govt. Share	Farmer Share
2010-11	40m2z3(13 Nos)	54520	43616	10904
2011-12	40m2z3(11 Nos)	54520	43616	10904
	105m2 c5-c6 "T" (8 Nos)	142650	114120	28530

स तरह हम कह सकते हैं कि आने वाले समय में पांगी घाटी के लोग नई तकनीकों तथा विधियों को अपना कर मटर की फसल तथा अन्य सब्जियों के विकास में अपना योगदान दे सकते है तथा अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठा सकते हैं।